पाँचवाँ अध्याय
अपूर्व योग-सामर्थ्य

साधु-सन्त योग-विद्या मे पारंगत होते हैं। योगाभ्यास द्वारा वे ब्रम्हानंद मे समाधि लगाकर अपनी जड देह में स्थित आत्मा एंव सच्चिदानंद परमेश्वर के सत् स्वरूप में एकरूपता स्थापित करते है। योग-विद्या के भी भिन्न-भिन्न प्रकार एवं मार्ग है। प्राचीनकाल से ही हमारे देश में अनेक अधिकारी विद्वानों ने योग विद्या का सूक्ष्म अभ्यास कर उसके गूढ प्रयोजनो को सच्चे जिज्ञासु के सम्मुख रखा है और उत्तम तथा योग्य शिष्यों का मार्ग दर्शन भी किया है। पंरतु, योगाभ्यास का प्रत्यक्ष फल तथा उससे उत्पन्न होने वाले अनेकानेक लाभ सुगमता से मनुष्य के नित्य देखने में नही आ सकते।

श्री साई बाबा न केवल योगाभ्यास के आदि थे, प्रत्युत् वे इस विद्या में निष्णात सिद्ध पुरूष थे। शिरडी गाँव से थोडी दूर एक वट-वृक्ष के नीचे जो कुआँ है, वहाँ वे हर तीसरे दिन स्नानार्थ जाया करते थे। ऐसे ही एक अवसर पर योग-विद्या का एक चमत्कार प्रत्यक्ष देखने में आया। स्नान के समय अपना उदर साफ करते समय श्री साई महाराज ने अपने पेट की आँतडियाँ बाहर निकाली और उन्हे अन्दर-बाहर से साफ-सुधरी करने के पश्चात समीप के जामुन -वृक्ष की एक शाखा पर सुखाने के लिए लटका दिया। योगविद्या का यह अद्‌भुत चमत्कार शिरडी गाँव के अनेक लोंगो ने अपनी आँखो से प्रत्यक्ष देखा था और उसकी सत्यता के संबंध मे प्रमाण भी उपस्थित किए गए है।

योग में वर्णित 'घौति' कुछ भिन्न प्रकार से की जाती है। उसमें स्वच्छ सफेद कपडे का तीन इंच चौडा तथा बाईस फीट लंबा टुकडा गीला कर अन्नगले थे कि वे उस तख्ते का भार सँभालने में असमर्थ थे। इसलिए उस अधर में लटके हुए तख्ते पर श्री बाबा किस प्रकार सोते होंगे, इस बात पर नलिका द्वारा पेट में डाला जाता है और आधे घंटे तक अँतडियों मे रखने के

पश्चात् उसे धीरे-धीरे बाहर निकाला जाता है। प्रत्यक्ष 'धौति' क्रिया तो इस प्रकार है। पंरतु, श्री साई के करतब तो जग से न्यारे ही होते थे।

इस योग-विद्या में खण्ड योग नामक एक अन्य प्रकार भी है। श्री बाबा ने इसका प्रयोग भी एक अवसर पर किया था। एक दिन एक सज्जन श्री बाबा के दर्शनों के लिए द्वारकामाई पहुँचे। पंरतु वहाँ एक विचित्र घटना देखकर वे आश्चर्यचकित एवं अत्यन्त भयभीत हूए। श्री बाबा ने अपने शरीर के कुछ अवयव कुछ दूरी पर खण्डित अवस्था में रखे हुए थे। यह भयानक घटना देखकर वे सज्जन बहुत घबराये और एक पागल मनुष्य की भाँति गाँव के मुखिया के घर की ओर दौडने लगे। पंरतु मार्ग में उनसे मन में तुरन्त यह विचार आया कि इस विचित्र घटना के संबंध में कही उन पर ही दोषारोपण न किया जाए। इसलिये वे पीछे मुडकर अपने घर लौट गये। दूसर ही दिन श्री बाबा को सदैव की भाँति अपने स्वाभाविक रूप में देखकर उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही। गत रात्रि में देखी वह भयानक घटना यथार्थ में एक स्वप्न होगा, ऐसा समझते हुए वे सज्जन लज्जित हो चुपचाप वही बैठे रहे। यह श्री बाबा का खण्ड-प्रयोग था। कहा जाता है, बचपन से योग-विद्या के भिन्न-भिन्न आसन तथा प्रयोग करने की दीक्षा उन्हें श्री व्यंकुशा(गोपालस्वामी) नामक अपने गुरू से प्राप्त हुई थी।

नानासाहेब डेंगले नामक एक भक्त ने द्वारकामाई में श्री बाबा के सोने के लिए एक फुट भर चौडा तथा चार हाथ लम्बा लकडी का तख्ता भेंट किया था। श्री बाबा उसे झूले की भाँति उपयोग में लाते थे। उन्होंने उस तख्ते को गले हुए कपडे की दो-चार लम्बी चिंदियों से बाँधकर द्वारकामाई में ही एक कडी से लटका दिया और तख्ते के चारों ओर मिट्टी के दीप रख कर उस पर नित्य-नियमपूर्वक शयन करना आरम्भ किया। कपडे के वे चिथडे इतने सडे लोगों को बडा ही आश्चर्य होता था। यही नही, नित्य प्रति रात्रि में यह अनोखी घटना अपनी आँखो से देखने कि लिए द्वारकामाई के बाहर लोग भारी संख्या

में उपस्थित होने लगे। कुछ लोगों ने तो दिन-रात द्वारकामाई मे डेरा डालकर निगरानी रखी। परंतु, किसी को भी यह अन्त तक ज्ञात नही हो सका कि साई महाराज कब और कैसे उस तख्ते पर चढकर सोते थे और फिर नीचे उतर जाते थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया, यह अभूतपूर्व दृश्य देखने कि लिए लोग अधिकाधिक संख्या में एकत्रित होने लगे। परिणामस्वरूप श्री बाबा को उचित मात्रा में निद्रा और विश्राम मिलना नितान्त असम्भव हो गया और एक दिन क्रोध में आकर उन्होनें उस तख्ते को तोड कर फेंक दिया।

श्री साई महाराज की सेवा कि लिए अष्टसिद्धियाँ सदैव उपस्थित रहती थी। उन्ही के बल पर वे अपना शरीर वायु की भाँति हलका बनाकर अधर में टँगे हुए तख्ते पर सा सकते थे और खौलते हुए तेल की कढाई में हाथ डालने जैसी आश्चर्यजनक एवं हतबुद्धि करने वाली क्रियाएँ सहज ही करके दिखा सकते थे। यद्यपि अष्टसिद्धियाँ सम्पूर्णत: उनके वश मे थी, तथापि कभी किसी अवसर पर केवल स्वार्थ-बुद्धि से प्रेरित होकर उन्होंने उनका उपयोग नही किया। सचमुच ही श्रीसाई महाराज पूर्णावस्था में पहुँचे हुए सिद्ध सद्गुरू थे।

एक बार श्री नानासाहेब चांदोरकर के साथ एक ऐसा विद्यर्थी शिरडी आया, जिसने योग-शास्त्र का थोडा-बहुत अध्ययन किया था। पंतजलि के योगसूत्रों का तो उसने विशेष अध्ययन किया था। श्री साई बाबा की कीर्ति से प्रभावित होकर वह मन में दिर्घ समाधि सम्बन्धी कुछ शास्त्रीय प्रयोग देखने की लालसा लिए श्री बाबा के पास आकर बैठ गया। उस समय श्री साईबाबा अल्पोपहार कर रहे थे और अचार और प्याज के साथ भाकरी(रोटी) खा रहे थे। उन्हें प्याज खाते देखकर उस विद्यार्थी ने सोचा ''प्याज जैसी अपवित्र वस्तु का सेवन करने वाला एक फकीर योग-शास्त्र क्या पढा सकता है?'' उसी क्षण उसके मन में उठी आशंका को अन्तर्ज्ञान से जानकर श्री बाबा ने नानासाहेब की ओर अभिमुख हो कहा ''अरे नाना! प्याज खाकर उसे हजम

करने के जिसमें शक्ति है, उसी को प्याज खाना चाहिए। अन्य किसी को इस फन्दे में नही पडना चाहिए।'' श्री बाबा के ये उद्‌गार सुनकर वह बाल-योगी बडा लज्जित हुआ और अनन्य भाव से श्री बाबा की शरण में आ गया। श्री बाबा ने उसे योग-शक्ति की कुछ गुप्त बातें बताई और उसका पूर्ण समधान किया।

एक बार दीपावली का मंगल महोत्सव मनाया जा रहा था। श्री बाबा ने नित्य की भाँति ही लकडियाँ डाल कर 'धूनी' को प्रज्वलित किया और हाथपाँव सेंकते-सेंकते सहसा अपने हाथ धधकती हुई आँच में डाल कर मानों उन्हें जलाने की चेष्टा की। समीप बैठे हुए माधव नाम के उनके एक सेवक तथा श्री माधवराव देशपांडे का ध्यान श्री बाबा की ओर गया। श्री बाबा के हाथ न जल जाएँ, यह सोचकर माधवराव जी ने श्री बाबा को कमर से दृढतापूर्वक पकडकर उन्हें बलपूर्वक पीछे अपनी ओर खींचा और घबरा कर पूछा-''हे देव, आपने यह क्या किया?'' समाधि भंग होते ही श्री बाबा पूर्ण शांति के साथ बोले-''अरे, मेरे एक लुहार भक्त की स्त्री भट्ठी के पास बैठी थी। अपने पति के पुकारने पर वह तत्परता से उठी थी और घबराहट में उसकी गोद का नन्हा बच्चा जलती हुई भट्ठी में गिर पडा। मैंने शीघ्रता से आँच मे हाथ डालकर उस बच्चे को ही बाहर निकाला और उसे बचाया। मेरे हाथ जल गये या झुलस गये, इस बात का मुझे यत्किंचित भी दु:ख नही। उस अबोध नन्हे बच्चे के प्राण बच गये, यह बहुत अच्छा हुआ।'' इस घटना से यह स्पष्ट हो जाता है की श्री साई अपने भक्तों का कितना ध्यान रखते थे। बाद में बहुत दिनों तक श्री बाबा ने अपने हाथ पर पट्टी बाँध कर रखे।

श्री साई बाबा अतीद्रिय भी थे। एक ही क्षण में भिन्न-भिन्न देह धारण कर भक्तों को दर्शन दिये जाने के अनेक अनुभव प्राप्त है। योगाभ्यास द्वारा ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त करने के पश्चात सिद्ध पुरूषों को यह शक्ति उपलब्ध होती है। एक दिन बाबा ने भक्त लोगों ने नित्य-नियम के अनुसार रात्रि में

उनकी आरती की। जब दुसरे दिन वही भक्त लोग पुन: उनके दर्शनों के लिए गये तो श्री साई महाराज ने कहा-''कल मैं दक्षिण दिशा की ओर घूमने गया था।'' श्री बाबा के इस कथन का कोई भी अर्थ नही लगा सका। केवल आश्चर्य प्रकट कर सब लोग स्तब्ध बैठे रह गये। कुछ ही समय बीता होगा कि वहाँ दक्षिण की ओर बसे हुए एक गाँव का व्यक्ति आया। उसने बताया''कल शाम को तो श्री बाबा हमारे गाँव में पधारे थे।'' यह सुनकर उपस्थित भक्तों ने श्री बाबा के पहले कहे हुए शब्दों का अर्थ तुरन्त ही समझ लिया। वे श्री साई महाराज की एक समय में दो या अधिक देह धारण कर सकने की अतीद्रिय शक्ति से पूर्णत: परिचित हो गये।

श्री कोल्हाटकर द्वारा लिखित 'श्री मदभागवतार्थ दर्शन' नामक ग्रंथ में आत्मा के अमर होने तथा उसके द्वारा ऐसे चमत्कार किये जाने के अनेक प्रमाण दिये गये है। श्री साईबाबा भी जागृत तथा स्वप्नावस्था में भिन्न-भिन्न देह धारण कर भक्तों को दर्शन देते थे। एक रात्रि में श्री बाबा ने बलवन्तराव खापर्डे को स्वप्न में दर्शन दिया और उनके घर पर भोजन कर आनन्द से झुले पर कुछ समय बैठकर पान खाकर चले आये इस घटना के पश्चात किसी से भी इस बात का उल्लेख किये बिना वे घर के लोगों के आग्रहवश श्री बाबा के दर्शनों के लिये उपस्थित हुए। उन्हे देखते ही श्री बाबा बोले-''कल शाम को मैने आपके घर पर पेट भर भोजन किया; परंतु आपने मुझे कोई दक्षिणा नही दी।'' यह कहकर उन्होंने बलवन्तराव जी से तुरन्त दक्षिणा प्राप्त की। परम भक्त श्री खापर्डे जी का यह अनुभव भी श्री साई महाराज में अतीन्द्रिय शक्ति का होना सिद्ध करता है।

इसी प्रकार श्री काकासाहेब दिक्षित का अनुभव भी बुद्धि को चकित करने वाला है। प्रात: काल स्नान-संध्या के पश्चात दिक्षित जी ध्यान-धारण में मग्न बैठे थे। अचानक उन्हें पंढपूर के विठोबा की साँवली मूर्ति आँखो के आगे दिखाई दी। जप पूर्ण होने के बाद काकासाहेब द्वारकामाई में श्रीसाई के

दर्शनों के लिय गये। उनकी और देखते हुए प्रसन्नता से हँसकर श्री बाबा बोल उठे ''क्यो? विठ्ठल पाटील आया था न?उसे भली-भाँति देख लिया न? वह बडा चालाख भगोडा है। उसे अच्छी तरह पकड कर रखो, नही तो वह नौ दो ग्यारह हो जायगा।'' श्री बाबा के यह शब्द सुनकर काकासाहेब की क्या दशा हुई होगी, इसका अनुमान पाठक ही लगा सकते है। दीक्षितजी की आँखे आँसुओ से भर गई। उन्होंने श्री बाबा के चरण पकड लिये, भोजन के लिये जब वे भोजन-गृह में पधारे तो उसी समय देवी-देवताओं के चित्र बेचता हुआ एक फेरीवाला वहाँ पहूँचा। श्री साई महाराज की लीलाएँ अगाध है। उनका वर्णन करते समय साधारण मनुष्य का मन आश्चर्य में गोते लगाने लगता है। फेरीवाले के पास जो चित्र थे, उनमें 'विठ्ठल' का भी एक चित्र था। प्रात:काल ध्यान-मग्न अवस्था में उन्होंने विठ्ठल का जो रूप देखा था, वही रूप उस चित्र में भी अंकित था। श्री बाबा की आज्ञा का पालन करते हुए दीक्षितजी ने तुरन्त ही वह चित्र खरीद लिया और नित्य पूजा अर्चना के लिये अपने पास रख लिया।

एक बार श्री साई महाराज ने दासगणू महाराज को 'नाम-सप्ताह' आरम्भ करने की आज्ञा दी। जब दासगणू महाराज ने उत्तर दिया की 'यदि सातवे दिन प्रत्यक्ष विठ्ठल का दर्शन प्राप्त हो तो ही सप्ताह आरम्भ करूँगा' तब श्री साई सीना तानकर आत्मविश्वास के साथ बोले,''अरे पगले, विठ्ठल तो यहाँ बैठा है। उसे देखना हो तो भक्त के मन मे उत्कट अभिलाषा और निष्ठा होनी चाहिए। यह शिरडी विठ्ठल का पुरातन स्थान है।''संयोगवश श्री बाबा के भक्त श्री देव ने, जो एक सरकारी अफसर थे, शिरडी के प्राचीन इतिहास के संबंध में खोज आरम्भ की और पर्याप्त अन्वेषण के पश्चात यह सिद्ध किया कि शिरडी या शीलधी एक अत्यन्त प्राचीन गाँव है और उसकी गणना पुराने पंढरपुर के क्षेत्र में होती थी।

बहुत लोगों का विचार है कि श्री साई महाराज लिखना-पढना नही

जानते थे, क्योंकि उन्होनें अपने जीवनकाल में न कुछ लिखा था और न ही कुछ पढा था। परंतु जो सत्पुरूष आत्मज्ञानी होते है, उन्हें वर्तमान काल कही ही नही, अपितु भूत तथा भविष्य की भी बातों क यथार्थ ज्ञान होता है। श्री साई महाराज यद्यपि सर्वज्ञ थे, तथापि व्यावहारिक दृष्टिकोण से उन्होने न कुछ लिखा था और न पढा था। परंतु वे उचित अवसर पर कार्य करके ही दिखाते थे।

अपनी पुत्री की अकाल मृत्यू से श्री दीक्षित जी बहुत दु:खी थे। किसी बात में भी उनका जी नही लगता था। दु:ख पीडित एवं म्लान-मुख श्री दीक्षितजी श्री साई महाराज के पास बैठे थे। उसी समय डाकिया दीक्षितजी के नाम का एक वी.पी. पार्सल लेकर वहाँ पहुँचा। दीक्षितजी ने 'भावार्थ रामायण' की एक प्रति मँगवाई थी। पुस्तक का वाचन आरम्भ करने से पूर्व दीक्षितजी ने वह श्री बाबा के हाथ में दी। श्री बाबा ने पुस्तक उलटी पकड कर उसके कुछ पृष्ठ पलटे और अन्त में दीक्षितजी को किष्किंधाकांड का वह प्रसंग पढने की आज्ञा दी, जिसमे बालि का वध हो जाने पर उसकी शोक-निमग्न पत्नी तारा को श्री रामचंद्र जी ने उपदेश दिया है। श्री बाबा दीक्षितजी की उस समय की मन:स्थिति तथा मनोव्यथा को देखकर ही उन्हें एक यथोचित प्रसंग पढने की आज्ञा देकर सचमुच ही अपनी दिव्य एवं अलौकिक शक्ति का परिचय दिया, यह तो अवश्यमेव मानना पडेगा।

सन् १९१६ के लगभग बापूशास्त्री गुलवे नामक एक सज्जन श्री साई महाराज के दर्शनो के लिये शिरडी पहुँचे। काशी से पवित्र गंगा नदी का जल वह अपने साथ लाये थे। शास्त्रीजी ने गंगा के पवित्र जल से शास्त्रानुसार श्री बाबा का अभिषेक किया और श्री रामदास-नवमी के दिन सज्जनगढ के लिये प्रयाण करने की आज्ञा माँगी। श्री बाबा ने कहा ''अवश्य जाओ। उधर भी मैं ही हूँ।''

श्री बाबाकी आज्ञानुसार शास्त्री जी सज्जनगढ पहूँच गये और रामदासनवमी के दिन प्रात:काल कोई पाँच बजे के लगभग श्री बाबा ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिया और उन्हें अपने पैर दबाने की आज्ञा दी। शास्त्री जी को थोडी देर अपनी सेवा का अवसर देकर श्री बाबा अदृश्य हो गये।

श्री बाबा के सशरीर प्रत्यक्ष दर्शन देने के कई उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते है। श्री साई का अपने एक परमभक्त श्री देवसाहब के घर पधार कर वहाँ भोजन करना, एक ऐसी ही अत्यन्त हृदयस्पर्शी एवं चिरस्मरणीय घटना है। बम्बई के निकट डहाणू गाँव मे श्री देव के घर किसी व्रत के उद्यापनका आयोजन किया गया था। श्री देव की इच्छा थी कि इस निमित्त से ही श्री बाबा ने हमारे घर में चरण रखें। इसी अभिप्राय से उन्होने तुरन्त ही शिरडी के श्री बापूसाहब जोग को एक पत्र लिखा। बापूसाहब ने श्री बाबा के सम्मुख श्री देव का पत्र पढा और उनकी ओर से श्री बाबा को भोजन का निमन्त्रण दिया। श्री साई महाराज ने तुरन्त ही यह उत्तर भेजने की आज्ञा दी की ''दो अन्य साथियों सहित मैं अवश्य ही भोजन में सम्मिलित होऊँगा।''

श्री साई महाराज का उत्तर पढकर श्री देव को अत्यन्त हर्ष हुआ। कुछ ही दिनों के बाद एक बंगाली संन्यासी गोशाला के लिये धन एकत्रित करने के हेतु डहाणू गाँव मे पहूँचा। श्री देव ने संन्यासी का उचित आदर-सत्कार किया। अधिक सहायता के लिये श्री देव ने उस बंगाली संन्यासी को एक महिने के पश्चात आने का परामर्श दिया। परन्तु एक दिन वही संन्यासी श्री देव के घर टाँगे पर सवार होकर आया। श्री देव उस समय उद्यापन के संबंध मे आयोजित भोजन की व्यवस्था में व्यस्त थे। संन्यासी के यह कहने पर कि वह धन इकट्ठा करने की अभिलाषा से न आकर केवल भोजन करने के उद्देश्य से ही आया है, श्री देव ने उसका स्वागत किया। वह संन्यासी यह कहकर कि,'मेरे साथ दो अन्य साथी भी हैं और उन्हें ले आकर मैं अभी उपस्थित होता हूँ ' चला गया। ठीक भोजन के समय सचमुच ही अपने दो

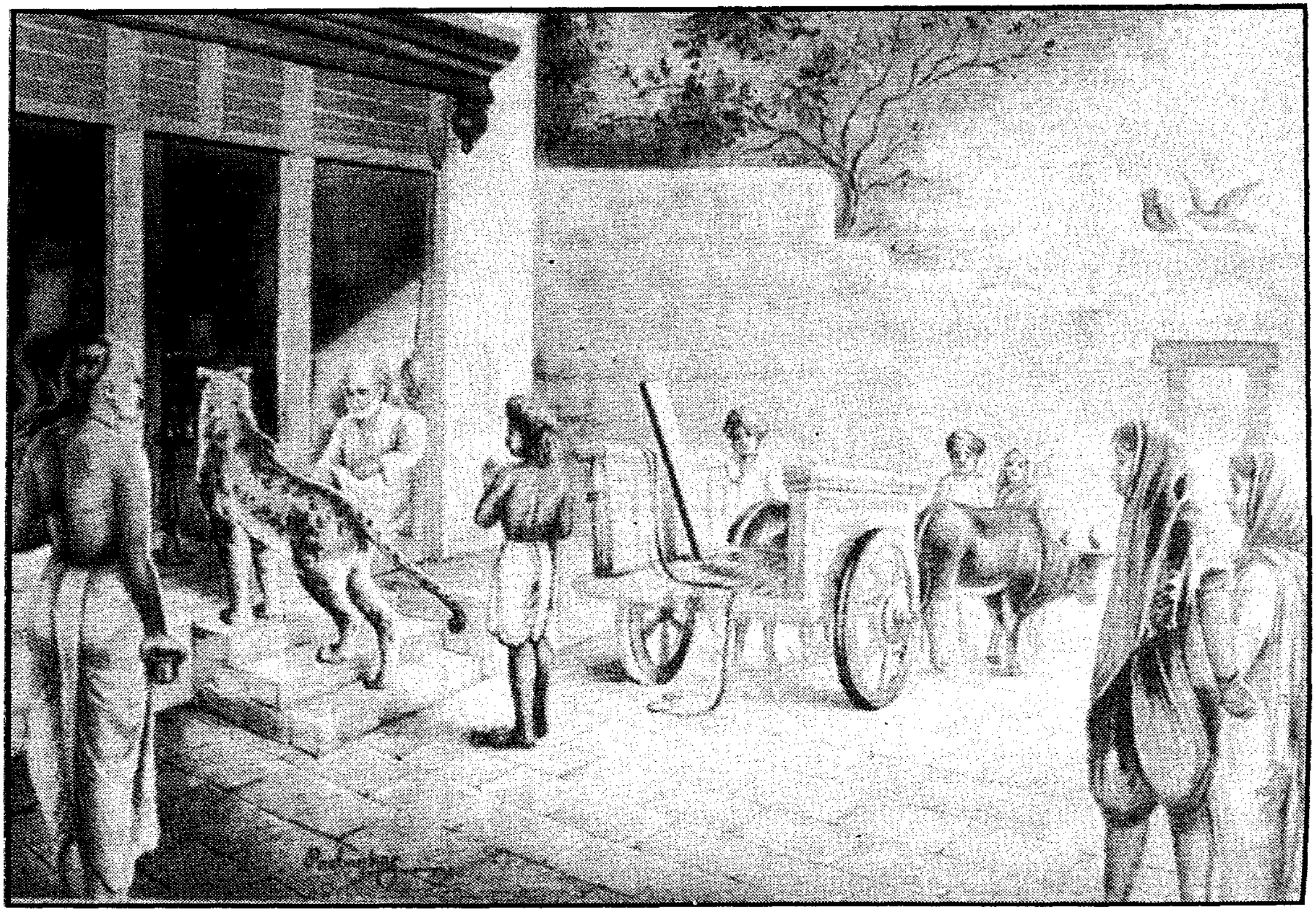

श्री बाबा के दर्शन कर बाघ ने प्राण त्याग कर सब को चकित कर दिया ।

साथियों के साथ वह संन्यासी आया और यथेच्छ भोजन कर वे तीनों ही चले गये। पर, इधर श्री देव इस बात पर बडे अप्रसन्न हो रहे थे कि अपने वचनानुसार श्री बाबा उनके घर भोजन करने उपस्थित नही हुए। उन्होंने तुरन्त श्री बापुसाहेब जोग के नाम उपालम्भ का एक पत्र शिरडी भेज दिया। श्री साई महाराज को जब वह पत्र सुनाया गया, तब वे हँसकर बोले,''अरे भाई, मैं अपने वचन के अनुसार अपने दो संन्यासी साथीयों के साथ देव के घर गया था और पेट भर खा-पी कर वापिस लौट आया। जब उन्होंने मुझे पहचाना ही नही तो मै क्या करूँ? पत्र लिखकर देव से यह पूछो की उद्यापन के दिन संन्यासी भोजन मे सम्मिलित हुए थे या नही और अपने मन का समाधान कर लो।'' श्री बाबा के साथ हुए इस वार्तालाप के विषय में श्री जोग का पत्र पढकर तो श्रीदेव की प्रसन्नता का पारावार न रहा; परंतु उन्हें इस बात का खेद बराबर बना रहा कि उन्होनें अपने घर पधारे हुए श्रीसाई को पहचाना तक नही।

श्रीसाई महाराज की सभी लीलाएँ ऐसी ही विस्मयजनक और मति कुंठित करनेवाली है। श्री बाबा का प्रत्येक आचरण, इतना ही नही, उनके मुख से स्वाभाविक ढंग से निकले हुए शब्द भी अति मूल्यवान सिद्ध हो चुके है। स्व. अण्णासाहेब दाभोलकरजी को श्री साई महाराज 'हेमाडपन्त' के नाम से पुकारते थे। आरम्भ में श्री दाभोलकर तथा अन्य लोगों को यही भ्रम हुआ की श्री बाबा हँसी-मजाक में ही उन्हें इस नाम से पुकारते है। परंतु आगे श्री दाभोलकर जी के हाथों से जो ठोस कार्य पूर्ण हुआ। उसे देखकर कोई भी व्यक्ति श्री बाबा की लिलाओं पर अचरज किये बिना नही रह सकता। प्राचीन काल में रामदेव राजा के दरबार मे 'हेमाडपन्त' नामक एक अत्यन्त चतुर बुद्धिमान मंत्री थे। उन्होंने कई विद्वता-प्रचुर ग्रंथो की रचना की है। मराठी की 'मोडी' लिपि के जनक वही थे। श्री दाभोलकर जी को हेमाडपन्त की पदवी से विभूषित कर श्री बाबा ने केवल विनोद ही किया था; परन्तु दाभोलकर जी

ने अपने महत्त्वपूर्ण कार्य से श्री बाबा द्वारा प्रदत्त हेमाडपन्त की उपाधि की सार्थकता सिद्ध करके दिखाई। साई संस्थान का कारोबार उन्होंने बडी निपुणता से सँभाला। संस्थान का हिसाब-किताब रखने में भी उन्होंने बडी बुद्धिमानी का परिचय दिया। श्री साई महाराज की लीलाओं और उपदेशों से परिपूर्ण ''श्रीं साई सच्चरित'' नामक मूल्यवान् ग्रंथ की रचना कर उन्होंने श्री साई श्री साई भक्तों पर महान उपकार किया। यह ग्रंथ श्री अण्णासाहेब दाभोलकर ने श्री साई महाराज की आज्ञा से ही आरम्भ किया था। इसका प्रत्येक शब्द और वाक्य श्री बाबा के आशीर्वाद एवं कृपा का ही फल है। इस दृष्टि से श्रीसाई महाराज के भक्तों के लिये तो ''श्री साई सच्चरित'' अति महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है।

संसार-जाल मे फँसे हुए मनुष्यों को सद्गुरू की आवश्यकता है या नही, इस प्रश्न को लेकर श्री अण्णासाहेब दाभोलकर और श्री काकासाहेब दीक्षित, दोनों ने प्रत्यक्ष परब्रम्ह श्री साई महाराज के सम्मुख चर्चा की थी। उसके बाद एक दिन बाहर जाने कि लिए आज्ञा माँगते हुए श्री काकासाहेब ने यों ही प्रश्न किया,''बाबा, कहाँ जाऊ?''

श्री बाबाने उत्तर दिया-''ऊपर।''

इस पर श्री काकासाहेब ने तुरन्त ही दुसरा प्रश्न किया ''परन्तु, मार्ग कैसा है।''

तब श्री बाबा बोले-''अरे, भाई, ऊपर जाने के लिये अनन्त मार्ग है। एक मार्ग यही, शिरडी है। परंतु, यह मार्ग बडा भयानक और संकटपूर्ण है। शेर, सिंह, भेडियें आदि हिंसक पशु अपने जबडे खोले हुए मार्ग रोके बैठे है।''

इस पर श्री काकासाहेब ने पुन: प्रश्न किया-''बाबा, यदि हम कोई कुशल मार्ग-दर्शक साथ लें तो?''

श्री बाबा ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया-''बहुत ही अच्छा! योग्य मार्गदर्शक मिला तो आप अवश्य ही अपने निर्दिष्ट स्थान तक पहूँच सकते है। वह मार्ग के सभी विघ्नो तथा संकटो को दूर कर या उनसे बचाकर आपकों सही मार्ग दिखायेगा और आपको अपना अंतिम ध्येय प्राप्त होगा।''

श्री साई महाराज के ये उद्‌गार सुनकर श्री अण्णासाहेब दाभोलकर जी के मन में यह पूर्ण विश्वास उत्पन्न हो गया कि सद्‌गुरू ही सच्चा मार्ग दर्शक है। उसका आशीर्वाद प्राप्त किये बिना किसी भी व्यक्ति के लिये यह भवसागर पार कर मोक्षपद तक पहूँचना सम्भव नही हो सकता। केवल धार्मिक ग्रंथो का पारायण करके या संतो को प्रवचनो को सुनकर मनुष्य अपनी आध्यात्मिक उन्नति नही कर सकता। परमार्थ प्राप्ति के लिये सद्‌गुरू की अत्यन्त आवश्यकता है। इसीलिये परमेश्वर बार बार अवतार लेकर भक्तों को यही चाहिये कि वे सद्‌गुरू के चरणो में अविचल निष्ठा एवं पवित्र भक्ति-भाव से पूर्ण समर्पण करें।

श्री साई महाराज के मुख से निकले हुए सहज उद्गारों में भी विश्व की गहन-गूढ पहेली का निराकरण करनेवाला महान् तत्त्व-ज्ञान भरा रहता था। उनकी भाषा, व्यवहार आदि साधारण जन के लिये तो कभी भी हल न होने वाली पहेली के समान थे।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋